6 समास

समास क्या है ? समास का अर्थ संक्षिप्त करना है। शब्दों तथा 'और' आदि संयोजकों दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द को समस्तपद अथवा समास कहा जाता है। जब दो या दो से अधिक पद अपनी विभक्ति को छोड़कर आपस में मिलते हैं, तो उनके मिले संक्षिप्त रूप को समास कहते हैं। जैसे—वन को गमन = वन-गमन। रात दिन = रात और दिन। यहाँ वन के साथ कर्म के चिह्न 'को' का लोप हो गया।

समास से उत्पन्न विशेषताएँ—(1) समास करने से बात को संक्षेप में लिखा या कहा जा सकता है।

(2) समास द्वारा मिलाए गए शब्द एक शब्द की भाँति प्रयोग में आते हैं।

(3) समासों के प्रयोग से भाषा सशक्त, प्रभावपूर्ण और चुस्त हो जाती है।

(4) समास से मिलाए गए शब्दों में पहले को पूर्व पद तथा दूसरे को उत्तर पद कहा जाता है।

(5) इन पदों में कभी पहला पद, कभी दूसरा पद और कभी दोनों पद प्रधान होते हैं।

समास-विग्रह—समस्त पद (समास द्वारा जोड़े गए शब्द) को उसके पूर्व रूप में लाना या अलग करके लिखना समास-विग्रह कहा जाता है।

जैसे—'हवनसामग्री' समस्त पद या समास है। इसका विग्रह करने पर 'हवन के लिए सामग्री' यह पहला रूप हो जाएगा।

अन्य उदाहरण—ब्रजरज = ब्रज की रज, जलमग्न = जल में मग्न, भवनसामग्री = भवन (निर्माण) के लिए सामग्री, हस्तलिखित = हाथ से लिखी गइ।

समास के भेद—समास के छह भेद होते हैं—

(1) अव्ययीभाव समास, (2) तत्पुरुष समास, (3) कर्मधारय समास, (4) द्विगु समास, (5) बहुव्रीहि समास, (6) द्वन्द्व समास।

कुछ विद्वान 'कर्मधारय' तथा 'द्विगु' को तत्पुरुष समास के ही उपभेद मानते हैं। इस प्रकार समास के मुख्य चार भेद भी माने जाते हैं।

(1) अव्ययीभाव समास

जिस समास का पहला पद अव्यय होता है उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास का पूर्वपद (पहला पद) प्रधान होता है। इस समास में प्राय: पहला पद अव्यय होता है। कभी-कभी दूसरा पद भी अव्यय देखा जाता है। इस समास का अव्यय के रूप में ही प्रयोग होता है।

उदाहरण— समास (समस्त पद)	विग्रह	समास (समस्त पद)	विग्रह
यथासमय	समय के अनुसार	यथासंभव	जैसा संभव हो
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	यथाविधि	विधि के अनुसार
आजीवन	जीवन भर	आजन्म	जन्म से लेकर
आसमुद्र	समुद्र पर्यंत	प्रतिदिन	दिन-दिन, प्रत्येक दिन
प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष	प्रत्येक	प्रति एक, एक-एक
निर्जल	नि: जल (बिना जल)	नित्यप्रति	नित्य प्रति
घर-घर	घर घर (प्रत्येक घर)	दिनभर	दिन भर (सारे दिन)
बेवफा	वफा के बिना	बेकार	काम के बिना
इच्छानुसार	इच्छा के अनुसार	मन-मन	मन ही मन